दादा भगवान परिवार का

फरवरी २०१९

शुल्कप्रति नकल : ₹ 20/-

अक्रम एक्सप्रेस

हार्टिली

हार्टिली

संपादकीय

बालमित्रों,

हार्टिली अर्थात् हृदय वाला, भावुकता वाला प्रेम। जहाँ हृदय है वहाँ मानवता है। वर्ना पाशवता ही है। हार्ट डेवेलप होना, बहुत बड़ी बात है। अनेकों जन्मों के संस्कार से व्यक्ति हार्टिली बनता है या फिर इस जन्म में उसे संतों का, सत्संग या फिर ज्ञानी पुरुष का मिलन हो जाए, तो, हार्टिली बनता जाता है।

यह पढ़कर आपको भी हार्टिली बनने का मन हो गया न!

तो आइए, हम इस अंक में जानेंगे कि हार्टिली व्यक्ति के क्या लक्षण होते हैं। हार्टिली कैसे बना जा सकता है? सभी को हार्टिली लोग क्यों प्रिय होते हैं?

और हाँ... यह अंक पढ़ने के बाद हार्टिली बनने का निश्चय करना मत भूलना हां।

-डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : ६ अंक: ११
अखंड क्रमांक: ७१
फरवरी २०१९

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2018, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

प्रश्नकर्ता : यदि हमें कोई खराब समाचार मिले या कोई व्यक्ति अपनी प्रॉब्लम बताए तो थोड़ा दुःख होता है। मन में प्रार्थना करते हैं लेकिन अंदर ऐसा हो जाता है कि ऐसा नहीं हुआ होता तो अच्छा होता, तो इसे क्या कहा जाएगा?

दीपक भाई : किसी का दुःख देखकर अंदर असर हो जाता है उसे भावुकता वाला प्रेम कहते हैं, हार्टिली कहते हैं। हार्टिली कैसा होता है? सामने वाले के दुःख जैसा ही खुद को असर हो जाता है। इतना ज्यादा असर हो जाता है कि सामने वाले को जितना दुःख लगता है उससे दस गुना ज्यादा खुद को लगता है। वह असर, वह भावुकता वाला स्वभाव, हार्टिली स्वभाव कहा जाता है।

और वह बुद्धि वाला स्वभाव कैसा होता है? कि उसके कर्म वह भुगते। हम क्या कर सकते हैं? मुझे क्या लेना-देना? यह सही रास्ता नहीं है।

हार्टिली अर्थात् क्या? जैसे कोई बीमार हो, उसे दुःख होता हो, तो हार्टिली इंसान उसकी हेल्प करता है। सेवा भी करता है और मन ही मन भगवान से प्रार्थना भी करता है कि उसे ऐसा दुःख नहीं हो या फिर उसे दुःख में समता रहे ऐसी शक्ति दीजिए।

ज्ञानी कहते हैं...

हार्टिली स्वभाव में भावुकता वाला प्रेम होता है कि अरेरे! बेचारे को कितनी तकलीफ है! उसे ऐसा असर हो जाता है और होना भी चाहिए। इसी से उसका हार्ट खिलता जाएगा।

हार्टिली स्वभाव उत्तम कहा जाता है। बुद्धि वाला स्वभाव अच्छा नहीं होता। जो मान देता है उसके साथ अटैचमेन्ट बढ़ जाता है और यदि किसी ने ज़रा सा भी दुःख दे दिया तो संबंध ही काट देता है। जिसने दुःख दिया है, जब उसे दुःख पड़ता है तब खुशी होती है, यह अच्छी बात नहीं है। भावुकता होनी चाहिए। हमें चाहे जैसा भी दुःख हो फिर भी उसे भूलकर उसकी हेल्प करनी चाहिए, उसे हार्टिली स्वभाव कहते हैं।

सत्संग से हार्ट खिलता है, संतों के आशीर्वाद से खिलता है। अपना ज्ञान हार्टिली बनाता है।

यह तो नई ही बात है !

जब हम मुसीबत में हों तब अगर कोई हमारी मदद करे तो बहुत अच्छा लगता है। लेकिन यदि कोई दुःखी हो तो उसके लिए कुछ भी नहीं करना, उसे स्वार्थ बुद्धि कहते हैं।

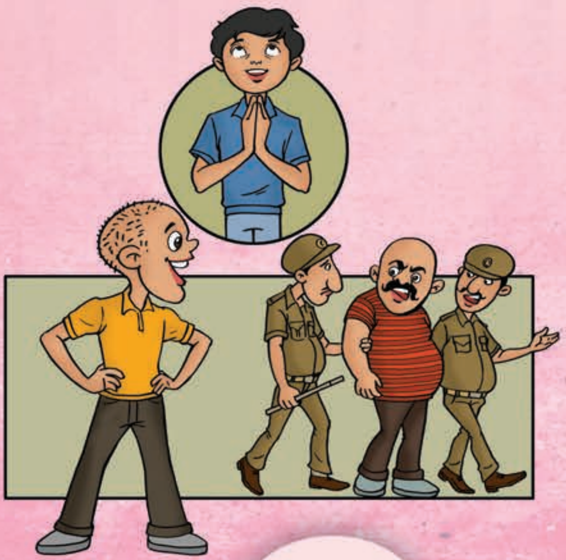

दुश्मन हो फिर भी उसका दुःख मिटे, ऐसी भावना होती है, उसे हार्टली कहेंगे। और यह तो, दुश्मन के साथ पाशवता हो जाती है। "उसे सीधा कर दिया" ऐसा कहकर खुश होते हैं।

हार्टिली अर्थात् क्या? हमारी तकलीफ को दूर
करने में यदि सामने वाला कष्ट में होता हो तो
खुद तप कर ले लेकिन सामने वाले को दुःखी
नहीं होने दे... तब से हार्टिली कहलाएगा।
और उसे दुःख होता है तो हो, मरे, मुझे क्या?
मैं मज़ा कर लूँ। अपने मोह पूरे कर लूँ... यह
बुद्धि बढ़ गई। उदाहरण के लिए बुद्धि वाले ने
पापा से २००० रुपए के जूते लाने के लिए
कहा हो तो, पापा तकलीफ में हों फिर भी
लेकर ही छोड़ेगा। जबकि हार्टिली स्वभाव वाला
पापा की तकलीफ देखकर जूते माँगेगा ही
नहीं। उसके पास जो होगा उससे चला लेगा।

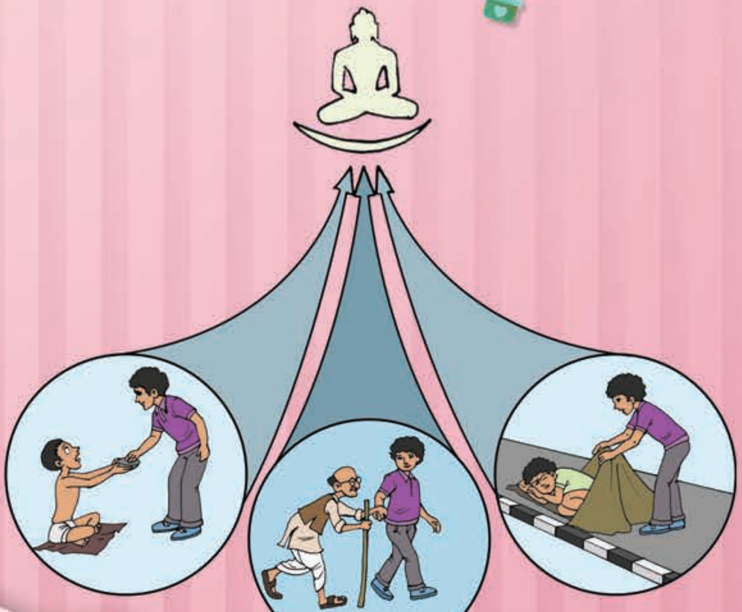

हार्टिली स्वभाव तो कभी
आत्मा की ओर ले भी
जाएगा और बुद्धि तो
आत्मा से दूर ले जाएगी।

किसके जैसा बनना पसंद करोगे?

एक अँधेरी रात थी। ज़ोरदार बिजली कड़क रही थी। बादलों की गड़गड़ाट के साथ मूसलाधार बारिश हो रही थी। एक छोटी सी झोंपडी के दरवाज़े पर २-३ बार दस्तक हुई।

"कोई है क्या?" मुसाफिर की आवाज़ में लाचारी थी।

"लगता है कोई भटक गया है। अँधेरी रात है और जंगल में खूँखार प्राणी हैं। हमें उसे आसरा देना चाहिए।" रामदास ने पत्नी से दरवाज़ा खोलने के लिए कहा।

"हं? इतनी छोटी सी झोंपड़ी में तीसरा इंसान कैसे समा पाएगा?" पत्नी ने दरवाज़ा खोलने के लिए मना कर दिया।

"अरे, मुझे पता है कि यह कोई राजा का महल नहीं है। गरीब की छोटी सी झोंपडी है। तीन लोग नहीं सो पाएँगे, तो क्या हो गया? बैठे-बैठे इधर-उधर की बातें करेंगे, गीत गाकर रात गुज़ारेंगे। मेहरबानी करके दरवाज़ा खोल दो, "रामदास ने अनुरोध किया।"

पत्नी ने दरवाजा खोला। बरसात में भीगे हुए मुसाफिर ने दिल से आभार व्यक्त किया।

थोड़ी देर के बाद दरवाज़े पर फिर से दस्तक हुई। रामदास ने दरवाज़े के पास बैठे हुए मुसाफिर से दरवाजा खोलने के लिए कहा।

"भाई, आप क्या कह रहे हो? इतनी छोटी झोंपड़ी में हम तीन मुश्किल से बैठे हैं। चौथे की जगह ही कहाँ है?" मुसाफिर ने दरवाज़ा खोलने से मना कर दिया।

"अरे भाई, मैं जानता हूँ कि यह कोई राजा का महल नहीं है। गरीब की छोटी सी झोंपड़ी है। तीन लोग बैठे हैं, तो चार खड़े-खड़े रात बिताएँगे।" रामदास ने मुसाफिर को दरवाज़ा खोलने के लिए कहा।

मुसाफिर ने बड़ी मुश्किल से दूसरे मुसाफिर के लिए दरवाज़ा खोला। थोड़ी देर के बाद फिर से ऐसा ही हुआ। जिस दुःख का सामना कुछ समय पहले उसने खुद किया था, उसी दुःख में सामने वाले को देखकर, भावुक होने के बजाय उसने अपनी सुविधा का पहले विचार किया।

कहानी पूरी होने के बाद, दादी ने अंजली के सिर पर हाथ फिराते हुए कहा, "बेटा, कई बार अपने सुख के लिए

पहले मुसाफिर की तरह, दूसरे के सुख के लिए पर्दा गिर जाता है।" जबकि रामदास जैसे व्यक्ति अपनी सुविधा का विचार किए बिना, औरों के दुःख दूर करने की भावना रखते हैं।

बोलो, तुम किसके जैसा बनना पसंद करोगी? हार्टिली रामदास या स्वार्थी मुसाफिर?

इस कहानी का अंजली पर इतना गहरा असर हुआ कि सालों बाद भी वह सामने वाले के सुख का पहले विचार करती और इसीलिए वह कॉलेज में सभी की प्रिय थी।

हर सेमेस्टर की तरह, इस सेमेस्टर में भी प्रोजेक्ट के सबमिशन से पहले अंजली का ग्रुप उसके घर पर इकट्ठा हुआ। रात के ग्यारह बजे अंजली की मम्मी गरमा गरम पकौड़े और कॉफी देने आई, "लड़कियों, बहुत देर मत करना।"

"ओह, थेंक यू सो मच आन्टी" नीलू ने पकौड़े मुँह में रखते हुए कहा।

सोनाली की नज़र नीलू के प्रोजेक्ट पर पड़ी। "अरे वाह नीलू, तेरा काम तो खत्म होने वाला है। यू आर लकी यार।"

नीलू की स्माइल में थोड़ा गर्व था। "हाँ, यार। आई कान्ट वेट कि कब यह पूरा हो, और कब मैं उस रजाई में घुसकर सो जाऊँ।" नीलू ही नहीं - अंजली, नीति और सोनाली भी उसी क्षण का इंतज़ार कर रही थीं।

रोज़-रोज़ के जागरण की यह अंतिम रात थी। सभी की आँखों में थकान और नींद दिख रही थी।

अपने अधूरे प्रोजेक्ट को देखकर सोनाली की थकान और ज्यादा बढ़ गई। "अरे, मेरे प्रोजेक्ट के पूरे होने का मूहूर्त कब आएगा।" सोनाली ने गहरी सांस ली।

रात के एक बज गए। एक ओर नीलू और नीता के तेज खर्राटे सुनाई दे रहे थे तो दूसरी ओर बाहर से क्रिकेट (झींगुर) की तेज आवाज़ आ रही थी।

अंजली ने चश्मा उतारकर टेबल पर रखा और अंगड़ाई ली, "फाईनली आई एम डन। गुड नाईट सोनाली।" लेकिन सोनाली के लिए नाईट - "गुड" तो किसी एन्गल से थी ही नहीं।

"गुड नाईट।" सोनाली की आवाज़ में दुःख था। अंजली ने झट से अपने हाथ नीचे किए और आँखें सोनाली की तरफ देखा। वह धीरे से सोनाली के पास जाकर बैठी और बोली, "Don't worry yaar" मैं हूँ न। चल, हम मिलकर तुम्हारा काम खत्म कर देते हैं। "Let me help you"

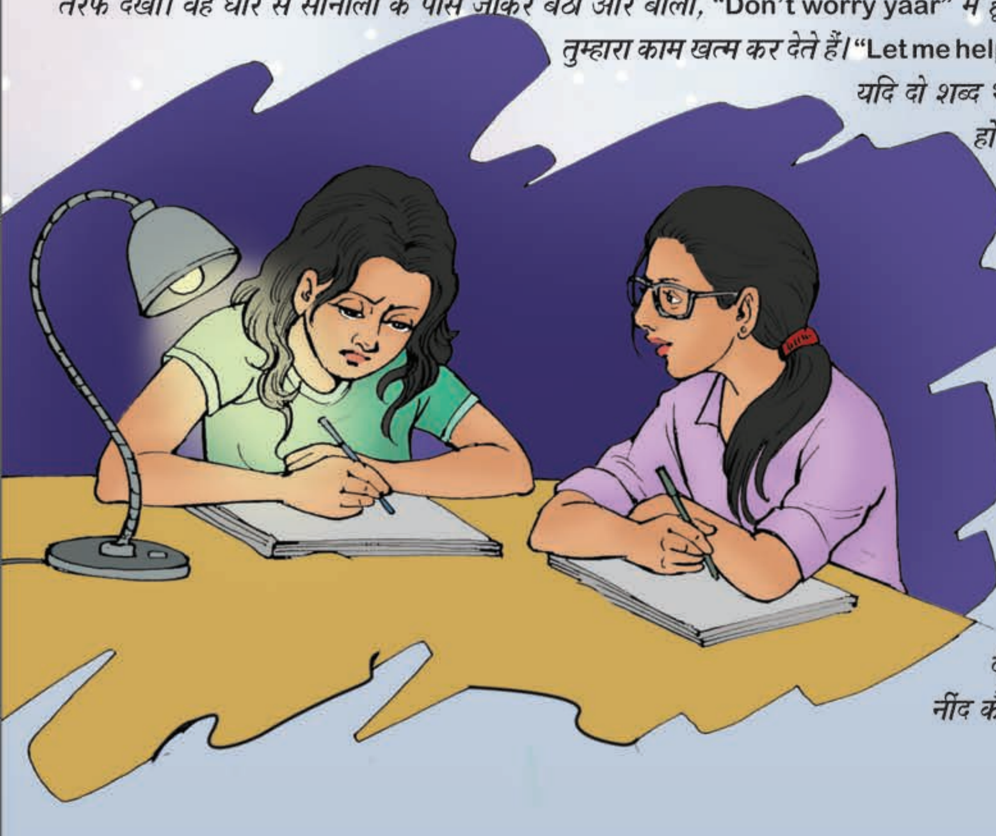

यदि दो शब्द भी अंजली ने और कहे होते तो सोनाली की आँखों में आँसू आ जाते।

"नहीं, अंजली। मैं खत्म कर लूँगी। Look at you तू कितनी थक गई है। जा, जाकर सो जा।" सोनाली ने कहा।

लेकिन अपनी फ्रेन्ड को तकलीफ में देखकर, अंजली चैन की नींद कैसे सो सकती थी? वह

चश्मा पहनकर सोनाली के पास बैठ गई।

सुबह चार बजे सोनाली का प्रोजेक्ट पूरा हुआ। शरीर में थकान थी, लेकिन अंजली और सोनाली के भीतर एक अलग ही संतोष था।

"Thanks yaar, Thank you so much" सोनाली ने अंजली से कहा।

"ओ.के. ओ.के. बहुत फॉर्मल होने की ज़रूरत नहीं है। चल अब, दो घंटे सो जाते हैं। कुछ फ्रेश हो जाएँगे।"

अंजली और सोनाली दोनों रजाई में घुस गई।

"Anjli can you imagine ?" कल, ओह आई मीन आज, हम फ्री हो जाएँगे। बिल्कुल फ्री..." सोनाली सपने देखने लगी, "पहले हम केन्टिन में वड़ापाव खाएँगे, फिर हम कैफे जाएँगे..."

"हाँ, हाँ..सब करेंगे। लेकिन प्लीज अब सो जा।" अंजली ने सोनाली के सिर पर टपली मारी।

उस दिन प्रोजेक्ट सबमिशन के बाद सोनाली की हालत देखने जैसी थी। उसे ऐसी मुक्तता महसूस हो रही थी कि जैसे किसी पिंजरे के पक्षी को आकाश में छोड़ दिया हो।

पार्किंग प्लॉट में से वह अपना व्हीकल लेने गई, तब पीछे से किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा।

"हाय सोनाली," अश्मी ने धीरे से कहा।

"अश्मी हाय..." सोनाली ने ज़ोर से अश्मी को पकड़ लिया, "ऐसे धीरे-धीरे क्या बोल रही है? आज तो खुशी का दिन है। आज तो हम सेलिब्रेट करेंगे।" सोनाली के मन में तरंगे फूट रही थीं।

"सोनाली, आज मेरा प्रोजेक्ट सबमिट नहीं हुआ। सर ने मुझे कल तक की परमिशन दी है।" अश्मी की बात चल रही थी, तभी अंजली वहाँ आ गई।

"यदि कल मैं अपना प्रोजेक्ट सबमिट नहीं करूँगी तो..." परिणाम सोचकर वह अपना वाक्य भी पूरा नहीं कर पाई।" मुझे हेल्प की ज़रूरत है, सोनाली तुम हेल्प करोगी?" हिंमत इकट्ठी करके अश्मी ने सोनाली से पूछा।

सोनाली के मन में चल रही तरंगों पर अचानक पॉज़ आ गया। थोड़ी देर में तो उसने कई बहाने सोच लिए। एक क्षण के लिए उसे ऐसा विचार भी आया कि "यदि यहाँ पाँच मिनिट पहले आ गई होती तो अश्मी का सामना ही नहीं करना पड़ता।"

सोनाली को एन्जोय करने का प्लान अश्मी को हेल्प करने से ज्यादा महत्वपूर्ण लग रहा था।

अपने सुख के सामने अश्मी की तकलीफ पर पर्दा ही पड़ गया था। वह भूल गई कि सिर्फ बारह घंटे पहले वह खुद भी अश्मी की स्थिति में ही थी और अभी वह बचने के बहाने ढूँढ़ रही है। कुछ देर की चुप्पी के बाद सोनाली के मुँह से यह शब्द निकले।

"Oh ! Asmi I am so sorry to

hear that... "मैं तेरी हेल्प ज़रूर करती लेकिन आज तो मुझे..."

सोनाली अपना बहाना पूरा करे उससे पहले ही अंजली बोल पड़ी, "अश्मी, तुम मेरे घर चलो। मैं तुम्हारी हेल्प करूँगी।"

सामने वाले की तकलीफ देखकर, वैसी ही तकलीफ का असर अंजली को हुआ।

सोनाली स्तब्ध हो गई। उसे लगा, "एन्जोय करने के प्लान तो अंजली ने भी बनाए थे। मुझ से ज्यादा थकान तो उसे होगी।" वह अंजली को देखती ही रह गई।

किसके जैसा बनना पसंद करोगी - हार्टिली रामदास या स्वार्थी मुसाफिर?"

सालों पहले दादी ने अंजली से पूछा था। मन ही मन दादी को दिया हुआ वचन, आज भी उसे भावुकता की दिशा में खींच ले जा रहा था।

अमृत

लेकिन किसी को मदद करने की बात कुँवर जी के दिल को कैसे अच्छी लगे?
बस, यह बात अंतिम बार कह रहा हूँ, मंत्री जी, कि हमसे पूछे बिना किसी भी बाहर की व्यक्ति को इस दरबार में आने की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए।
जमुना काकी निराश होकर चली गई। उस रात
कुँवरसाहब, "छोटा मुँह बड़ी बात" कह रहा हूँ। लेकिन रानी माँ हमेशा सबकी मदद करती थीं। यह आप भी...
मदद? लेकिन उससे मुझे क्या फायदा?
कुँवर, हर बात में फायदा, नुकसान तो नहीं देखा जाता न। औरों का दुःख देखकर, हमारा हृदय द्रवित तो हो ही जाता है न?
एक बात समझ लो मंत्री जी। रानी माँ अब इस दुनिया में नहीं हैं और उनके जैसी भावुकता हमारे अंदर नहीं मिलेगी। इसलिए बेकार ही ढूँढने की कोशिश मत कीजिए।
सिर्फ मंत्री जी ही नहीं, लेकिन पद्मानगरी की प्रजा भी कुँवर जी के व्यवहार से परेशान थी।
कहाँ वे भावुकता का सागर जैसी रानी माँ और कहाँ यह मतलबी कुँवर। कोई मेल नहीं है। क्या समय आ गया है।

जहाँ प्रजा कुँवर के अभिगम से परेशान थी, वहाँ कुँवर अपने शरीर में होने वाले विचित्र बदलाव से...
यह क्या? ये ऊँगलियाँ वास्तव में टेढ़ी हो रही हैं या मेरा भ्रम है?
धीरे-धीरे कुँवर का भ्रम हकीकत में बदल गया। सिर्फ ऊँगलियाँ ही नहीं, लेकिन कुँवर के सभी अंग टेढ़े होने लगे।
कई राज्यों के वैद्यों को बुलाया गया। लेकिन कुँवर के रोग का न तो किसी के पास निदान था न ही इलाज।
कुँवर को भयंकर बीमारी ने घेर लिया। एक दिन...
कुँवर जी, समाचार मिला है कि नदी के उस पार एक विद्वान वैद्य रहते हैं। लेकिन वे लंबा सफर करने के लिए तैयार नहीं हैं।
रोग से मुक्ति पाने के लिए कुँवर कुछ भी करने के लिए तैयार थे।
तो हम उनके पास चलते हैं। कल सुबह ही जाने की तैयारी करो, मंत्री जी।

वैद्य ने कुँवर की जाँच की।
इस रोग का एक ही ईलाज है। अमृत की दो बूँदें।
कुँवर को आशा जागी।
कौन सी बूँदें? कहाँ मिलेंगी ये बूँदें?
अमृत की दो बूँदें, जिस किसी ने कभी पी लीं, टेढ़े हो जाएँ सीधे। विद्वानों ने यह वचन कहे हैं।
इतना कहकर, वैद्य मौन हो गए। बहुत पूछा, लेकिन वैद्य के मुख में से एक शब्द भी नहीं निकला।
क्या आपको मेरी पीड़ा के लिए बिल्कुल भी दया नहीं आ रही? ईलाज पता है तो बताते क्यों नहीं हो?
लेकिन कुँवर के शब्दों का वैद्य पर कोई असर नहीं हुआ। अपने जैसा ही कठोर व्यक्तित्व देखकर कुँवर को वैद्य से ज्यादा अपने आप से बहुत घृणा हुई।
निराश होकर कुँवर और मंत्री वहाँ से लौटे। रास्ते में पानी पीते समय कुँवर का संतुलन बिगड़ने से वे नीचे गिर पड़े। एक बूढ़ी काकी वहाँ से निकल रही थी।

अरे! कुँवर जी, आपको तो बहुत चोट लगी है। मैं अभी एक मलहम ले आती हूँ।
कुँवर जी, यह वही जमुना काकी है, जो अकाल में मदद माँगने आई थी लेकिन कुँवर जी को जमुना काकी की कोई स्मृति नहीं थी।
जमुना काकी ने प्रेम से कुँवर जी के घाव पर मलहम लगाया। जिस हाथ की सिलवटें देखकर एक बार कुँवर जी को चिढ़ हुई थी, आज उसी हाथ के वात्सल्य को देखकर कुँवर जी का हृदय भर आया।
कुँवर जी ने काकी का दिल से आभार व्यक्त किया। काकी की आँखों में से आँसू की दो बूँदे गिरीं। जैसे ही कुँवर जी घोड़े पर चढ़ने लगे, एक अजीब घटना हुई।
उनके टेढ़े अंग सीधे हो गए। अब, कुँवर जी को वैद्य की बात का मतलब समझ में आया।
ओहो, अमृत अर्थात् यह लागणी का अमृत। विद्वानों ने सही कहा है - इस अमृत में सामने वाले को दुःख से बाहर निकालने की अनोखी शक्ति होती है।
जमुना काकी के भावुकता वाले प्रेम में भीगकर कुँवर जी उनके सामने नतमस्तक गए। उस दिन के बाद, पद्मानगरी की प्रजा को कभी भी रानी माँ की कमी महसूस नहीं हुई।

चलो खेलें...

1

मित्रों, दर्शाए गए चित्र में, नीचे दी गई चीज़ें छिपी हुई हैं। उन्हें ढूँढ निकालिए।

2

बालमित्रों,
घड़ी में कितने
बजे हैं?

A) 5512
B) 5511
C) 5023
D) 5522

3

पहेली हल करो।

A IS FATHER OF C.
D IS SON OF B.
NOW E IS FATHER OF A.
IF C IS SISTER OF D
THEN WHO IS E TO D?

चलो खेलें का जवाब :

१.

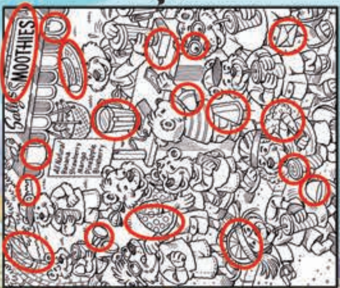

२. B) 5511

३. Grandfather

ऐतिहासिक गौरवगाथा

(मगध देश के महामंत्री का पुत्र स्थूलिभद्र धर्म प्रेमी था। लेकिन वह राज नर्तकी रूपकोशा के रूप से आकर्षित होकर उस पर आसक्त हो गया। राजा धनानंद को महामंत्री के प्रति अविश्वास होने पर मंत्री शकटाल ने आत्म समर्पण कर दिया। इस घटना की जानकारी मिलने पर स्थूलिभद्र को संसार के प्रति वैराग्य जाग गया। उन्हें अपने पाप चुभने लगे। उनका प्रायश्चित करके, आत्मा का शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिए वे आचार्य संभूतिविजय के पास गए। अब आगे पढ़ते हैं...)

जीवन की इस नई दिशा में स्थूलिभद्र ने अपने आप को बहुत जल्दी अनुकूल बना लिया। आत्मा के कल्याण के लिए और जैसे बीते हुए सालों की कमी पूरी कर रहे हों उस प्रकार वे धर्म में ही रचे पचे रहने लगे। उनका साधु जीवन उदाहरण रूप बनता जा रहा था। उन्होंने गुरु का पूर्ण विश्वास जीत लिया। थोड़े ही समय में उन्होंने आंतरिक शत्रुओं पर काबू पा लिया।

वर्षा ऋतु शुरू हो गई। साधुओं को चातुर्मास में एक ही जगह पर स्थिर होकर धर्मध्यान करना होता है। स्थूलिभद्र और अन्य तीन साधुओं ने अपने संयमी जीवन की कसौटी करने के लिए विपरीत परिस्थिति में चातुर्मास बिताना तय किया। हर एक ने अपने आप ही स्थल तय किया। एक साधु ने सिंह की गुफा के पास रहने के लिए गुरु से मंजूरी माँगी। एक ने साँप के बिल के पास रहने की मंजूरी माँगी, एक साधु ने कूए की धार पर रहने की मंजूरी माँगी। आचार्य को हर एक की शक्ति पर भरोसा था। और इसीलिए वैसा करने की मंजूरी दे दी।

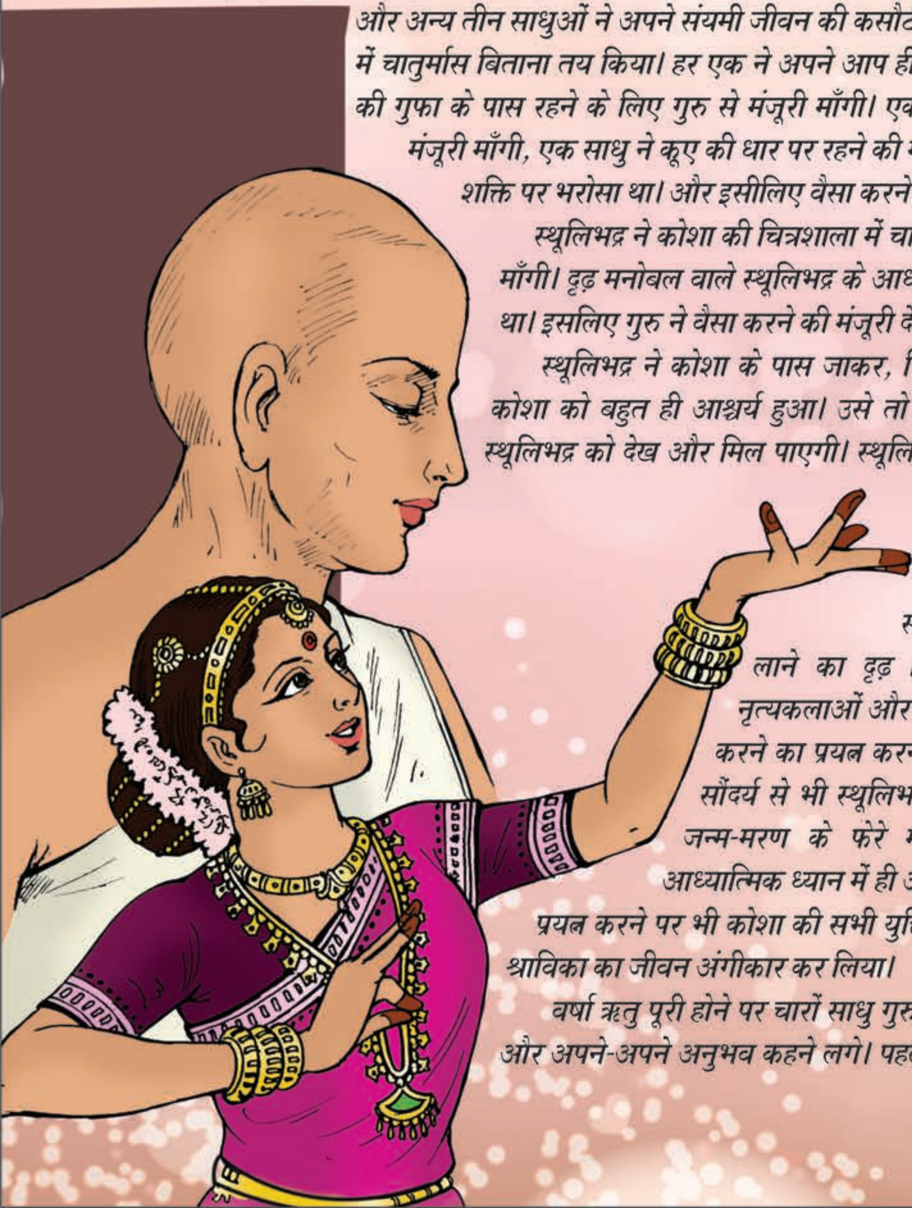

स्थूलिभद्र ने कोशा की चित्रशाला में चार महीने रहने की नम्रतापूर्वक मंजूरी माँगी। दृढ़ मनोबल वाले स्थूलिभद्र के आध्यात्मिक विकास के लिए यह ज़रूरी था। इसलिए गुरु ने वैसा करने की मंजूरी दे दी।

स्थूलिभद्र ने कोशा के पास जाकर, चित्रशाला में रहने की मंजूरी माँगी। कोशा को बहुत ही आश्चर्य हुआ। उसे तो आशा ही नहीं थी कि वह फिर से स्थूलिभद्र को देख और मिल पाएगी। स्थूलिभद्र की अनुपस्थिति में वह सचमुच बहुत दुःखी थी। अब वह आनंद में आ गई। उसे स्थूलिभद्र के इरादे का पता नहीं था। कोशा ने तो स्थूलिभद्र को अपने जीवन मे वापस लाने का दृढ़ निश्चय कर लिया। अपनी तमाम नृत्यकलाओं और रूप से वह स्थूलिभद्र को चलायमान करने का प्रयत्न करने लगी। लेकिन कोशा के अभूतपूर्व सौंदर्य से भी स्थूलिभद्र ज़रा भी नहीं डिगे। उन्हें तो अब जन्म-मरण के फेरे में से मुक्ति प्राप्त करनी थी। वे आध्यात्मिक ध्यान में ही अपने मन को दृढ़ बनाने लगे। अथाग् प्रयत्न करने पर भी कोशा की सभी युक्तियाँ निष्फल गईं। अंत में उसने भी श्राविका का जीवन अंगीकार कर लिया।

वर्षा ऋतु पूरी होने पर चारों साधु गुरु महाराज के पास वापस लौट आए। और अपने-अपने अनुभव कहने लगे। पहले तीनों ने अपनी सफलता की बातें

की उन्हें सुनकर आचार्य प्रसन्न हुए और उन्हें अभिनंदन दिया। जब स्थूलिभद्र ने अपनी कसौटी की बात बताई तब आचार्य अपनी बैठक से उठे और उन्हें गले लगा लिया और बहुत ही कठिन परीक्षा पास की, ऐसा कहकर अभिनंदन दिया। यह देखकर अन्य तीनों साधुओं को अच्छा नहीं लगा।

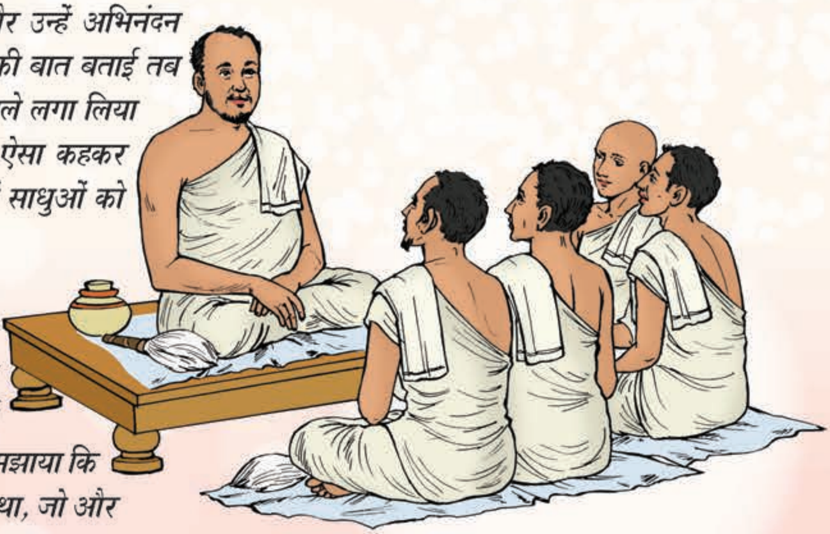

स्थूलिभद्र को इतना ज्यादा महत्व किसलिए? उन्होंने तो सचमुच बहुत सारी शारीरिक तकलीफों का सामना किया था। जबकि स्थूलिभद्र तो पूरे वर्षा ऋतु सुख सुविधा में ही रहे। आचार्य ने समझाया कि स्थूलिभद्र ने जो किया वह असंभव काम था, जो और कोई नहीं कर सकता।

पहले साधु ने बड़ाई मारते हुए कहा कि, अगली वर्षा ऋतु में मैं कोशा के घर चतुर्मास करूँगा। आचार्य को पता था कि यह बात उसके लिए शक्ति से बाहर की है। इसलिए उन्होंने उसे बहुत समझाया। लेकिन साधु ऐसा सिद्ध करना चाहते थे कि उनकी आध्यात्मिक शक्ति स्थूलिभद्र से ज्यादा है। आचार्य ने अनिच्छा से ऐसा करने की मंजूरी दे दी।

अगली वर्षा ऋतु में वह साधु कोशा के महल पहुँच गए। कोशा अब सादा और संयमित जीवन बीता रही थी। लेकिन सादगी में भी उसका रूप छूपा नहीं था। उसे देखकर साधु अपना संयम गँवा बैठे। वह कोशा के प्रेम के लिए तड़पने लगे।

स्थूलिभद्र का पवित्र जीवन देखकर, कोशा ने सर्वत्र त्याग की ज़िंदगी कैसी होती है वह जान लिया था। साधु का दिमाग़ ठिकाने लाने के लिए कोशा ने शर्त रखी कि जब वे पाटलीपुत्र के उत्तर में २५० मील दूर नेपाल में जाकर वहाँ से उसके लिए हीरा जड़ित रेशमी वस्त्र ले आएँगे तभी उसका प्रेम प्राप्त कर सकेंगे।

साधु चातुर्मास में मुसाफरी नहीं कर सकते लेकिन वे कोशा को पाने के लिए इतने पागल बन गए थे कि साधु के सभी आदर्श भूल गए।

कई दिनों तक पैदल मुसाफरी करके, अनेक तकलीफें उठाकर वे रेशमी वस्त्र लेकर कोशा के पास आए। अब कोशा मेरा प्रेम ज़रूर स्वीकार करेगी ऐसी इच्छा के साथ उन्होंने कोशा को रेशमी वस्त्र दिया।

कोशा ने कीमती वस्त्र हाथ में लिया। उससे अपने हाथ पैर और मूँह पोंछकर कीचड़ में फैंक दिया। यह देखकर साधु को गहरा आघात लगा। उन्होंने कोशा से कहा, "कोशा तुम पागल हो गई हो? अनेक तकलिफें उठाकर मैं इतनी किंमती भेंट तुम्हारे लिए लाया था और तुम ने एक क्षण में उसे कीचड़ में फैंक दिया?"

जवाब में कोशा ने कहा, "आप भी तो अनेक प्रयत्नों और तपश्चर्या के बाद प्राप्त किया हुआ अपना साधुत्व एक क्षण में बर्बाद कर रहे हो।"

यह सुनकर साधु को अपनी मूर्खता समझ में आई। उन्होंने कोशा से माफी माँगी और खुद को पतन के मार्ग पर जाने से रोकने के लिए बहुत उपकार माना।

वे तुरंत आचार्य के पास पहुँच गए। अपने गुनाहों की आलोचना करके प्रायश्चित किया। उसी दिन से स्थूलिभद्र के लिए उनका आदर अमाप हो गया।

इस प्रकार कामविजेता मुनि स्थूलिभद्र का नाम ८४ चोवीशी तक याद रहेगा।

क्रमशः

जीवंत उदाहरण

सरदार वल्लभ भाई पटेल "द आयर्न मैन ऑफ इन्डिया" - लौह पुरुष के नाम से जाने जाते हैं। इस फौलादी इंसान का हृदय बहुत ही प्रेमालु और भावुक था।

वल्लभ भाई अत्यंत महत्वाकांक्षी थे। १८९७ में उन्होंने मैट्रिक पास किया। आगे पढ़ने का बहुत उत्साह था लेकिन पैसे नहीं थे। उस समय मैट्रिक के बाद कुछ खास परीक्षा देकर वकालात हो सकती थी। वल्लभ भाई के बड़े भाई विट्ठल भाई ने भी यही किया। वल्लभ भाई के स्वतंत्र मिजाज को यह व्यवसाय अनुकूल आया।

कुछ समय तक वकालात करने के बाद वल्लभ भाई को बैरिस्टर बनने की महत्वाकांक्षा जागी। लेकिन उस जमाने में इंग्लैन्ड जाकर बैरिस्टर बनने के लिए ८-१० हज़ार रुपए जैसी बड़ी रकम की ज़रूरत थी। तीन साल सख्त मेहनत की, किफायत से जीवन जीकर वल्लभ भाई ने पैसे इकट्ठे किए। दस्तावेज तैयार करवाकर टिकिट ली। लेकिन हुआ ऐसा कि पोस्टमैन ने दस्तावेज और टिकिट आदि वल्लभ भाई पटेल के बड़े भाई, विट्ठल भाई पटेल के पास भेज दिए। डाक पर वि.जे. पटेल. का नाम था। वल्लभ भाई और विट्ठल भाई दोनों को लागू पड़ता था। उस समय पासपोर्ट पर फोटो लगाने की प्रथा नहीं थी।

विट्ठल भाई डाक लेकर वल्लभ भाई के पास पहुँचे। कागज़ देखकर वल्लभ भाई बहुत ही खुश हुए। लेकिन उस समय वे अपने बड़े भाई की नाराज़गी समझ गए। बड़े भाई के साथ बात करते समय उन्हें समझ में आया कि उन्हें भी विदेश जाकर पढ़ने की बहुत इच्छा है.

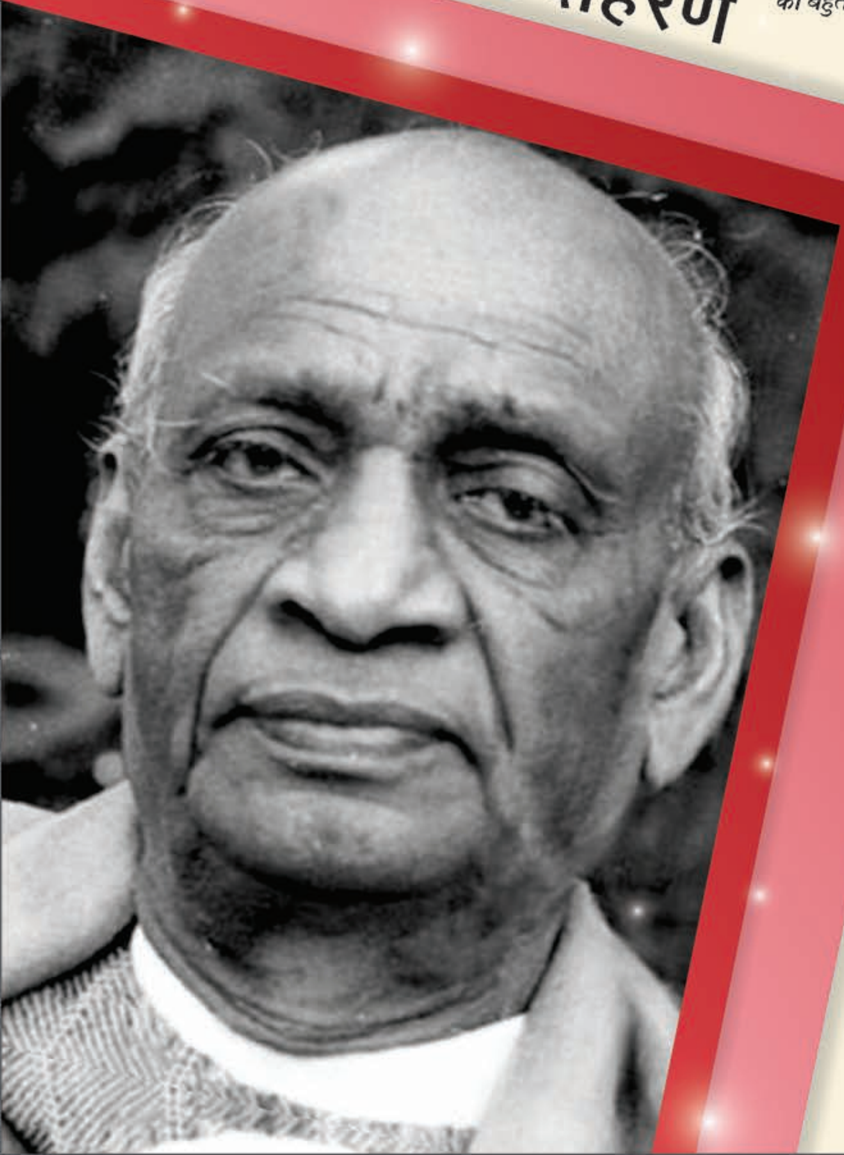

इस बात का पता चलते ही, ज़रा सा भी सोचे बिना, वल्लभ भाई ने अपने सभी दस्तावेज बड़े भाई को दे दिए और कहा, "विट्ठल भाई, आप भाभी और बच्चों की ज़रा भी चिंता मत करना। वे हमारे साथ रहेंगे। आप बस इंग्लैन्ड जाने की तैयारी कीजिए। और हाँ, वहाँ पहुँचकर पैसे की फिक्र भी मत करना। बस पढ़ने में मन लगाना। मैं पैसे भेजता रहूँगा।" विट्ठल भाई अपने छोटे भाई का इतना बड़ा दिल देखकर स्तब्ध रह गए।

और इस प्रकार, वल्लभ भाई ने किंचित्मात्र संकोच किए बिना, कड़ी मेहनत से प्राप्त की हुई रकम बड़े भाई के लिए खर्च कर दी। हाथ में आया हुआ मौका भाई के लिए जाने दिया।

तो मित्रों, ऐसा था हमारे लौह पुरुष का भावुक हृदय!

मीठी यादें

नीरू माँ यू.के. में थे। वहाँ एक अच्छी प्रिंटिंग प्रैस थी इसलिए आप्तपुत्र भाई उसका मशीनरी देखने जाने वाले थे। पिछली रात को सत्संग पूरा होने के बाद नीरू माँ उनके रूम में गए। दीपक भाई थे, कुछ यंग भाई थे, और कुछ महात्मा भी थे।

सभी नीरू माँ के साथ बातें कर रहे थे। जिन भाईयों को दूसरे दिन प्रैस देखने जाना था वे ऊँघ्रे नीचे हो रहे थे कि नीरू माँ बातें बंद करके सोने के लिए कहें तो सभी महात्मा जाएँ और हम भी सोने जाएँ लेकिन नीरू माँ सो ही नहीं रहे थे। जब तक नीरू माँ नहीं सोएँ तब तक वहाँ से कोई जाए भी नहीं और नीरू माँ को नींद आ नहीं रही थी।

नीरू माँ तो मूड में बातें किए जा रहे थे, सभी को बहुत हँसा रहे थे। वे भाई तो नीरू माँ को देखे जा रहे थे। उन्हें नीरू माँ के पास से उठना भी नहीं था और जाना भी था, ऐसी हालत थी। ऐसा करते-करते रात के एक बज गए।

तभी नीरू माँ ने कहा मुझे भूख लगी है। "मुझे फ्रैन्च फ्राईज़ खानी हैं।"

कुछ ही देर में फ्रैन्च फ्राईज़ आ गई। नीरू माँ ने एक टुकड़ा खाया, और बाकी सभी को खिला दिए। फिर पता चला कि नीरू माँ को भूख लगी ही नहीं थी। उन्हें तो सो ही जाना था। लेकिन जो ब्रह्मचारी भाई बाद में आए थे, वे भूखे थे। उन्हें यह पता था कि खाने का सब वाइन्ड अप हो चुका है इसलिए उन्होंने उनके लिए बनवाए। यदि नीरू माँ डायरेक्ट कहते कि, यहाँ कुछ बना देते हैं, तो वे लोग मना ही कर देते। इसलिए नीरू माँ ने यह तरकीब की।

अंत में ब्रह्मचारी भाई ने कहा, "नीरू माँ, अब सो जाइए।"

नीरू माँ ने कहा, "मुझे तो कब से सोना है, लेकिन आप लोग उठते ही नहीं हो इसलिए मुझे ऐसा कि आपको अभी मेरे पास बैठना है। आपको आनंद हो, इसलिए मैं कुछ बोल नहीं रही थी।"

उन भाई ने कहा, "ओहो, हम सभी को भी कब का सोना है, लेकिन हमें ऐसा लगा कि आपको नींद नहीं आ रही इसलिए बातें कर रहे हो।"

इस प्रकार आमने-सामने की गड़बड़ पर सभी बहुत हँसे और सोने चले गए।

नीरू माँ महात्माओं का ध्यान रखते और महात्मा नीरू माँ को जो अच्छा लगता वह करते।

वाह... कैसे अद्भुत ज्ञानी और कैसा अद्भुत ज्ञानी का परिवार!

Akram Express
February 2019
Year : 6, Issue : 11
Conti. Issue No.: 71

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

नए साल के दिन बच्चों द्वारा पूज्यश्री का स्वागत

पूज्यश्री ने अक्रम झंडा लहराया...

बच्चों द्वारा डान्स

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए खास जानकारी कि अगले महीने से कुछ कारणों से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस पब्लिश करना बंद कर रहे हैं। अब से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस **Akonnect app** या **Kids Website** की नीचे दी गई लींक से डाउनलोड करके पढ़ सकेंगे।

https://kids.dadabhagwan.org/knowledgehouse/magazines/Hindi/All+Years/All+Months/

अभी जो हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस के ऐक्टिव मेम्बर हैं, उन्होंने मेम्बरशिप रजिस्टर करने के दौरान जो रकम दी थी, वह पूरी रकम उनको मनी ऑर्डर द्वारा वापस भेज दी जाएगी।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025